अद्वयतत्त्व होने से नाम-नामी में कुछ भी भेद नहीं है। अस्तु, भगवन्नाम लेते हुए जीवन की क्रियाओं को भगवत्स्मरण के अनुकूल बनाकर हमें नित्य-निरन्तर, दिन में चौबीस घण्टे भगवत्स्मरण रखने का अभ्यास करना चाहिए।

यह किस विधि से सम्भव है? आचार्यों ने इसका दृष्टान्त दिया है। किसी विवाहिता स्त्री की परपुरुष में आसक्ति अथवा किसी पुरुष की परायी स्त्री में आसक्ति साधारण आसक्ति से कहीं अधिक प्रबल होती है। इस प्रकार आसक्त हुआ प्राणी अपने प्रियतम के चिन्तन में नित्य तन्मय रहता है। उपपति के स्मरण में मग्न स्त्री गृह-कार्य करते हुए भी उससे मिलने के लिये सदा उत्कण्ठित रहती है। ऐसा होने पर भी अपने गृह कार्य को वह अधिक सावधानी से करती है, जिससे किसी को उसके उपपतित्त्व का भान न हो जाय। इसी प्रकार परम प्रियतम श्रीकृष्ण का नित्य चिन्तन करते हुए हमें अपने लौकिक कर्तव्यों का सुचारु रूप से निर्वाह करना चाहिए। इसके लिए प्रगाढ़ अनुराग की अपेक्षा है। यदि श्रीभगवान् में हमारा प्रगाढ़ प्रेम-भाव होगा तो स्वधर्म का आचरण करते हुए भी हम उनका स्मरण कर सकेंगे। पर इससे पूर्व उस प्रेम-भाव को उद्भावित करना होगा। श्रीकृष्ण का प्रेमी होने से अर्जुन नित्य उनके चिन्तन में तन्मय रहता है; श्रीकृष्ण का नित्य सहचर होते हुए भी उसने युद्ध किया। श्रीकृष्ण ने यह नहीं कहा कि वह युद्ध से विमुख होकर ध्यान के लिए वन में चला जाय। जब श्रीकृष्ण ने अर्जुन के प्रति योग-पद्धति का वर्णन किया तो अर्जुन यह कहने को बाध्य हो गया कि इस मार्ग का अभ्यास करना उसके लिए सम्भव नहीं है।

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूधन।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात् स्थितिं स्थिराम्।।

अर्जुन ने कहा, हे मधुसूदन! आपके द्वारा संक्षेप से कही गई योग-पद्धति मुझे अस्थायी और अव्यावहारिक सी दिखाई देती है, क्योंकि मन अति चञ्चल है। (गीता ६.३३)

परन्तु श्रीभगवान् ने उत्तर में कहा—

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः।।

'सम्पूर्ण योगियों में भी, जो श्रद्धावान् योगी भक्तियोग के द्वारा मेरी सेवा करता है, वह मुझसे सर्वाधिक अन्तरंग रूप में युक्त है तथा सबसे उत्तम है।' (गीता ६.४७)

अतएव जो नित्य-निरन्तर भगवत्स्मरण करता है, वह सर्वोत्तम ज्ञानी और भक्त-शिरोमणि है। श्रीभगवान् ने अर्जुन से आगे यह भी कहा है कि वह क्षत्रिय है, इसलिए युद्ध का परित्याग नहीं कर सकता; किन्तु यदि वह उन (श्रीकृष्ण) का चिन्तन करता हुआ युद्ध करेगा, तो अन्तकाल में भी उसे उनकी स्मृति बनी रहेगी। इसके लिए